

वाधाई हो वाधाई है सतिगुर नानक वाधाई है।
कलि पावन करुणा सिंधू अमर गुर को वाधाई है॥

मुबारक मातु सुखदेवी रसिक शिरमोर सुत पाया
मुबारक बाबा रोचल को सिद्धी सुक्रतों की पाई है॥

मुबारक आत्माराम स्वामी मिला शिष्य सुजस का भांजन
मुबारक प्यारी बुआ को सन्त सेवा कमाई है॥

मुबारक गाम नर नारियुनि दिव्य दीदार पाया जनि
मुबारक पालने वाली धनु धनु दालतां दाई है॥

मुबारक पमनदास शिक्षक सुनी रघुवर कथा पहिले
दर्शन से सफलु कर नयननि विद्या पाछे पढ़ाई है॥

मुबारक बन की तरु वेली जहां छुपिके भजन कीआ
बहा कर प्रेम के आसूं सुरति अपनी भुलाई है॥

मुबारक अविनाश चंद्र स्वामी
बना मुरिशिदु जो बालक का
सहिचरि साकेत की जानी विपन झांकी लखाई है॥

मुबारक सीया राघव को कीरति गायक मिला ऐसा
आशीशों से झोली भर भर तत सुख की राह चलाई है॥

मुबारक स्वामी अखण्डानंद उड़िया बाबा मुबारक हो
सरलता शील से जिनिकी करी सेवा सचाई है॥

मुबारक सकल सन्तो को मिला साथी प्रेम पथ का
बैठि सतिसंग में जिनके हरी चर्चा चलाई है॥

मुबारक श्री बृज स्वामिनि मुबारक प्यारे नंद नन्दन
कराया नाम कीर्तन संगत सारी नचाई है॥